मनुस्मृति की शिक्षा

- डॉ. बलवीर आचार्य

महर्षि मनु का परिचय :- भारतीय परम्परा के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य कम थे और उपभोग के साधन पर्याप्त थे। अतः राज्य एवं राजा की आवश्यकता नहीं थी। १ सामाजिक व्यवस्था का निर्धारण धार्मिक जन करते थे, जो समाज के मुखिया होते थे। इन्हें प्रजापति कहा जाता था। इनमें प्रथम प्रजापति का नाम ''ब्रह्मा'' था। भारत का इतिहास इसी ब्रह्मा से शुरू होता है। अतः इसको आदिम पुरूष/आदि पुरूष, स्वयम्भू अथवा आत्मभू कहा गया है। २ इस आदि ब्रह्मा ने प्रजापति के पद पर बैठकर सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सुव्यवस्था का जो मार्ग प्रशस्त किया था बाद में उसके वंशजों ने उसको आगे बढ़ाया। ब्रह्मा के ये वंशज ''ब्रह्मा गोत्र'' से ही जाने गये। संस्कृत साहित्य में सात ब्रह्मा प्रजापतियों का उल्लेख मिलता है। इनमें सातवें ब्रह्मा प्रजापति का नाम था ''पद्मज''। ३ पद्मज ब्रह्मा के घर एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम ''मनु'' रखा गया। मनु ने युवा अवस्था तक सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। ब्रह्मा अर्थात् स्वंयभू के वंश में उत्पन्न होने के कारण इसका वंशज विशेषण ''स्वायम्भुव'' प्रसिद्ध हुआ और वह ''मनुस्वायम्भुव'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ४ प्रजापतियों के कुल में उत्पन्न होने के कारण मनु को ''प्रजापति'' भी कहा जाता है। ५ सप्तम ब्रह्मा पद्मज नामक प्रजापति के काल तक जनसंख्या काफी बढ़ गयी थी, इसी कारण सामाजिक समस्यायें उत्तरोत्तर बढ़ रही थी। प्रजा जनों ने पद्मज से आग्रह किया कि सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावशाली उपाय किया जाये। तब पद्मज नामक ब्रह्मा ने अपने पुत्र मनु को राजा बनाया। इस प्रकार यह ''स्वायम्भुव मनु'' भारतवर्ष का प्रथम राजा बना। ६ इसने सामाजिक सुव्यवस्था के लिए संविधान एवं धर्मशास्त्र का निर्माण किया। ७

वंश परम्परा : - स्वायम्भुव मनु शासन कौशल, धर्मशास्त्र एवं संविधान निर्माता के रूप में इतने प्रतिष्ठित हुए कि इसके बाद ब्रह्मा वंश नाम गौण होकर समाप्त हो गया और मनु के नाम से मानव वंश चल पड़ा। इस वंश में चौदह ''मनु'' नामधारी प्रतिष्ठित राजा हुए। भारतीय काल विभाजन का नामकरण इन्हीं चौदह मनुवों के आधार पर ''मन्वन्तर'' रखा गया। इस प्रकार सर्वप्रथम मन्वन्तर का नामकरण स्वायम्भुव मनु के नाम पर ''स्वायम्भुव मन्वन्तर'' किया गया। इस समय सातवा ''वैवस्वत मन्वन्तर'' चल रहा है। स्वायम्भुव मनु के समान सातवां मनु वैवस्वत भी ऐतिहासिक पुरूष रहा है। जिस जलप्रलय का वर्णन अधिकांश विश्व के साहित्य में मिलता है वह जल प्रलय वैवस्वत मनु के काल में ही हुई थी। इससे यह भी सिद्ध होता है कि तत्कालीन अधिकांश विश्व पर वैवस्वत मनु का साम्राज्य था।

मानवों का आदि पुरूष :- मनु के वंजश ही मानव कहलाते हैं। ८ संस्कृत भाषा के मनुज, मानुष, मनुष्य और मानव शब्द मनु शब्द से ही बने है। इनका अर्थ होता है मनु की सन्तान। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से एशिया एवं यूरोप की अधिकांश भाषायें आर्य परिवार की भाषायें है। इन भाषाओं में मनुष्य के लिए प्रयुक्त शब्दों का मूल ''मनु'' शब्द ही है। यथा– इंग्लिश– मैन (डंद) जर्मन– मन्न (डंदद), मनेश (डंदमी), लेटिन व ग्रीक – माइनोश (डलदवे) आदि। इसी प्रकार यूरोप की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त 'मेनिस', मनुस, मनीस, मनेश, मैन्स आदि शब्दों का मूल भी मनु शब्द ही हैं।

बाईबिल और कुरान में आदम और नूह की कथा आती है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने पर ये दोनों शब्द क्रमशः आदिम (ब्रह्मा) और मनु के ही विकृत रूप हैं। फारसी, इरानी और सिन्धी भाषाओं में ''स'' को ''ह'' हो जाता है। यथा सप्ताह को हफ्ता। इसी सिद्धान्त पर मनुस का मनुह बना और कालान्तर में ''नूह'' रहा गया। आदिम (ब्रह्मा) का आदम रूप प्रचलित हो गया। इसका समर्थन पाश्चात्य इतिहासकार मेनिंग ने भी किया

है। ६

मनुस्मृति का परिचय :- वर्त्तमान में उपलब्ध मनुस्मृति में १२ अध्याय एवं २६८५ श्लोक हैं। अध्यायों के अनुसार मनुस्मृति का वर्ण्य विषय इस प्रकार है :–

(१) सृष्टि एवं धर्म की उत्पत्ति। (२) संस्कार एवं ब्रह्मचर्य। (३) विवाह, गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्य और पंचयज्ञ। (४) मनुष्यों का व्यवहार। (५) भक्ष्य– अभक्ष्य, शुद्धि– अशुद्धि विषय। (६) वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम के कर्त्तव्य। (७–६) राज धर्म एवं न्याय विधि। (१०) वर्ण संकर एवं वर्ण परिवर्तन आदि। (११) प्रायश्चित्त। (१२) कर्मफल, मोक्ष आदि।

मनुस्मृति में प्रतिपादित धर्म अर्थात् कर्त्तव्य कर्म। सार्वभौमिक, सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक हैं। जिनको पाँच भागों में विभाजित कर सकते हैं – (१) वैयक्तिक धर्म (२) पारिवारिक धर्म (३) सामाजिक धर्म (४) राष्ट्र धर्म/राज धर्म एवं (५) सार्वभौमिक धर्म। मनुस्मृति में धर्म की सार्वकालिक, सार्वदेशिक एवं सार्वभौमिक परिभाषा इस प्रकार दी गयी है–

धृतिः क्षमा दमो स्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।। ६.६२

१. न वै राज्यं न राजासीत् न च दण्डो न दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षन्ति स्म परस्परम्।। (महाभारत शन्ति पर्व) ५६.४
२. ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव। मुण्डक उप१
३. यदिदं सप्तमं जन्म पद्मजं ब्रह्मणो नृप। (महाभारत शान्ति पर्व) ३४८/४८
४. स वै स्वायम्भुवः पूर्व पुरूषो मनुरूच्यते। ब्रह्ममाण्ड पुराण १/२६/३२,३६
५. (क) मनोश्चैव प्रजापते। महाभारत शान्ति पर्व ३६/२
(ख) प्रजापतिर्वै मनुः। शतपथ ब्राह्ममण ६/६१/१८
६. रामायण बालकाण्ड ६/४ पश्चिमोत्तर संस्करण। विष्णु पुराण १/७/१६, ३/१/६
७. (क) मनुर्वै यत्किंचावदत् त ह भेषजं भेषज तायाः।
तैत्तिरीय संहिता २/२/२०/२, ताण्डय ब्राह्मण २३/१६/७
(ख) अविशेषेण पुत्रणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां निसर्गादौ मनुः स्वायभ्युवो ब्रवीत्।। निरूक्त ३/४
(ग) महाभारत शान्ति पर्व ३६/३, आश्वमेधिक पर्व अध्याय ६२
८. (क) ताः इमाः मानव्यः प्रजाः। तैत्तिरीय संहिता २/३०/१, ५/१/५/६
(ख) मनोरपत्यं मनुष्यः (मानवः) निरूक्त ३/४
(ग) मनोवंशो मानवानां .... मनो जातास्तु मानवाः। महाभारत आदि पर्व ७५/१४
६. एन्सिएण्ट एण्ड मेडिवल इण्डिया, Vol. I, Page No. 118

About the Author

Dr. Balvir Acharya, PHD, D Litt. Former Head of the Department of Sanskrit, chairperson of Maharshi Dayanand Research Foundation and head of Yajya Shaala Samiti, Maha Maharshi Dayanand University, Rohtak, Haryana; DAV School Samiti Rohtak –Member, former member of Sahitya Academy, editorial board member of International Research Journals as well member of several other university board of studies across India. He has also published several books, and most recently, "Vaidika Upasana Vidhi".